

2) भूगोलिक विशेषताओं का भारतीय इतिहास पर प्रभाव

(Impact of Physical Features on Indian History)

भूगोल का इतिहास एक गहरा कनेक्ट मैच है। "भूगोल हमारे इतिहास का मखाणी कथा है।" भारत को विश्व इतिहास का जग उ मंडलता ही प्रदर्शित करेगा। हमें मखरों हिर, हिरों ही वरु, मलहाज, पगडां, सैगलां, नरीमां काहि है इतिहास के किमाह हिर धरुड मंडल्युक्त हिमा यारिमा।

राजनीति पर प्रभाव

(Effects in Political Field)

(i) भारत की मौलिक एकता

(Basic Unity of India):-

भूमि से भारत हिर रमा है। हिमरे उड्ड, उड्ड-पंडम कने उड्ड-युध हिर हिमाहिमा यधउ, युध-रुध हिर धीमल ही खरु, पंडम-रुध हिर कध मगर उ रुध हिर हि मंमगर रु। हिर हिर उध-मंरीय के ममरु है - हिर हरी हि मपरी गी हनीमां। रुरगुयउ मरीमा, कमेर, ममरुगुयउ, रुरगुयउ, हिरुमारिंडन, गमरायत, मलहुरीक मलरी कने कधउ हगे मामरां कथीत भारत हिर राजनीति पर प्रभाव है उड्डम प्रमाह मिरु है रु।

(ii) भारत का अलग अलग होने का प्रभाव

(Separation of

India from North Asia):-

भारत के उड्ड हिर हिमाहिमा हीमा हिमा कने उड्डिमा यधउ मरीमां के भारत के अलग होने के प्रभाव है उड्डम प्रमाह मिरु है रु। हिरां पगडां के रुर 16,000 रुट से 17,000 रुट ही उड्डि उर मखिउ रु।

अंडे आम डे उ घट सल हरे गडिे जत। डिम लही डिहू
 डे याड रतन घडुड रडिन डे। डिहू हरे डडुड रत सल
 अंडे रापत अरि डुडुडी डेडीमा डे डेमां तल घडुड
 पंत मदीय गि।

(iii) डडुड डी डिहूं यामिमां डे यारिडर गडिमा (National Protection of India from Three Sides):-
 डडुड डी डुगलिर मडिडी डे डिहूं यामिमां डे डिम डे यारिडर गडिमा घडुडी डे। डुडुड डिहू 1,500 मील डेडीमां अंडे 150 मील डे 200 मील डर डेडीमां डिमलिमा पडुडुड मुडीमां जत। उमलाहणं लही डिहूं डे अापडीमां डेमां तल याड रतन अमडुह मी। डिम लही हँष-हँष जुगां डिहू डेडी ही उमलाहण डिम यामिडिं डडुड डुडे उमलां तगीं रड मरिमा। मयमड डे डि डिमलिमा पडुडुड डे मरड डडुड डे डेरीराड रां उषहाले रत डेम डीडा डे।

(iv) डुडुड-पंडम डे डिहूडी उमलाहणं रत युडेम (Invasions of Foreign Invaders from the North-West):-
 डे डुडुड-पंडम डिहू डेघड, रडुम डेडी, गेमल अंडे डेलात तामर डे जत। डिम लही डिहू मरड डिहूडी उमलाहणं डे डडुड डुडे उमला रत डे उमडे डे जत। डीगरीमां, जुनारीमां, रुमाहां, डुहां, डुगं, मुगलं अंडे डुगरीमां डे डिहूं डेडीमां डे याड रत डडुड डे हल अडाही डीडी।

(v) डेनाध- डडुड डीमां डेमलारुत लडाहीमां रत अषाड (Punjab - Arena of Decisive Battles of India):-
 डुगलिर मडिडी डे रत डेनाध मरीमां उर डडुड डिहू अापडी

उड़ीसा का उद्भव और फैलाव का कारण
 गंगा है। उड़ी-पंडरी रीखा के पास रहे मठ के
 पत्तिका उमलाह यथाथ हिंदू युद्ध में रहे और उड़ी के
 उठते उड़े सिद्ध युपत रक्त लक्षी पत्तिका हिम उठते
 उठाने हिंदू लक्षीखा रक्षीखा यरीखा।

उठती हिंदुआम रीखा मारीखा है
 और जंग - पलटाए लक्षीखा यथाथ हिंदू उड़ीखा। 1191 ई.
 और 1192 ई. हिंदू मुस्लिम गंगे और युद्धी गंग उठते
 हिंदू उठाने है मथान उ है दारी लक्षी उड़ी। हिम
 उठे 1526 ई. हिंदू घाघर और विद्यगंगी लक्षी हिंदू
 पक्षीपत ही पत्तिका लक्षी और 1558 ई. हिंदू मथर
 और उठे हिंदू पक्षीपत ही दूरी लक्षी उड़ी। हिंदू
 लक्षीखा है तडीने हरे उठते हिंदू मुगल मामगरी ही
 की उठी गयी। मथर उ है उठती हिंदुआम रीखा
 घरत मउठयुद्ध लक्षीखा यथाथ हिंदू उ लक्षीखा मथीखा

(vi) हिंदी उमलाह लक्षी मथरमथ र मथर (Source of Attraction for Foreign Invaders):-

गंगा और मथर है
 मथर की खेडों ही उयराए पठती और हिंदू ही यत-हैलत
 हिंदी उमलाह लक्षी मथीखा उर मथरमथ र मथर
 धरी गी। मथर हरे, उर उमलाह मथीमथ गंगही
 है हिम खेडों ही मथीमथ हैलत के युपत रक्त है लक्षर
 लक्ष उी हिंदू 17 उमले बीते मथ।

(vii) उड़ी उठते हिंदू मामगरी र उठाने (Rise of Empires in North India):-

उड़ी उठते गंगा उ मथर र
 मथर सिद्धा रिमालिखा उं हिंदीमथर उर और धुम-
 यउठ उं मथर उर दैलिखा उं हिंखा है मथर है मउ उं
 मथर मथरमथ यरेखा हिंदू है। हिंदू ही पठती मथीमथ

दिये जाते हैं। नलदाय मित्र लक्ष्मी धरत कर्तव्य है।
दिये हैं- उक्त- उक्त जगों दिस मंगीमां माभग्न, गण्ड
माभग्न, हरयत माभग्न, दिल्ली मलउत, मुगल माभग्न
आदि हिमाल माभग्न मधपउ रहे। दिस यूरेम री
कुम्भगली डे यत- ईलउ उक्तुं कू दूय डे दूय सिंउं यूपउ
रत लक्ष्मी उउमाउ दिरी मी।

(viii) दिल्ली - भारत की राजधानी (Delhi - the Capital of India)

:- दिल्ली कापटी बुगलिर मखिडी हे राष्ट्र भारतदम
री मउ डे उउउत गण्यकी गी है। यूरीत नल दिस
दिल्ली कू दिखपुमध रिग नंगर मी। मंगीमा माभग्न
ऊडे गण्ड माभग्न री गण्यकी पारलीपुँउठ मी,
सिउडी भारत हे बैरु दिस करी मी। दिस उउमम हे
ममें डे मगे मुमलमान गरमां ते दिल्ली कू कापटी
गण्यकी घट्टिआ, सिम रगे मुमलिम माभग्न कू
दिल्ली मलउत गी रिग नंगर लंगा। मंगीमां ते ही
1911 ई. डे धामर रहरुंटा री खां डे दिल्ली कू गण्यकी
घट्टिआ ऊडे कांन ही दिल्ली भारत री गण्यकी है।

(ix) दक्षिण भारत का उत्तरी भारत से अलग होना (Separation of South India from North India) :- दक्षिण भारत का

दिलिगम काम ऊठ डे उउउती भारत डे अलग गि। दक्षिण
पठार री बुमी यंखगीली उह राष्ट्र सिमारा दिये जाई करी
ऊडे पठार री कापिरउठ रिमा नंगलां ऊडे यउधउ
मुंहीमां नल पिठिआ उदिआ है। दिस घेउठ ते
उउउती भारत हे दिरेमीमां डे उउ नंगर दाले माभगं कू
मगह लक्ष्मी उउउत डे मुंगिउत मधत ही पूरान रीडे।

(x) भारत का एक-पृष्ठी होना (Unitary)

Relations of India with South-Eastern Countries

(i) - पुरातन काल से ही भारत का दक्षिण-पूर्वी देशों तक व्यापक संबंध रहा। यह ही भारत को दक्षिण-पूर्वी देशों से वैश्वीकरण के लिए रास्ता बना। चीन, थाईलैंड, म्यांमार, इंडोनेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, ब्रह्म, बर्मा, थाई, मलाया, इत्यादि देशों से भारत के घाटों तक व्यापक संबंध रहा। भारत के साथ ही, उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा। दक्षिण-पूर्वी देशों से भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा।

(ii) अस्तित्व स्वतंत्र राज्यों का अस्तित्व (Existence of Independent Rajput Kingdoms):-

उन्नीसवीं शताब्दी के दक्षिण-पूर्वी देशों तक व्यापक संबंध रहा। यह ही भारत को दक्षिण-पूर्वी देशों से वैश्वीकरण के लिए रास्ता बना। चीन, थाईलैंड, म्यांमार, इंडोनेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, ब्रह्म, बर्मा, थाई, मलाया, इत्यादि देशों से भारत के घाटों तक व्यापक संबंध रहा। भारत के साथ ही, उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा। दक्षिण-पूर्वी देशों से भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा।

(iii) भारतियों की विदेशी हमलों से पराजय (Defeat of Indians by the Foreign Invaders):-

विश्वीकरण के लिए भारत का व्यापक संबंध रहा। यह ही भारत को दक्षिण-पूर्वी देशों से वैश्वीकरण के लिए रास्ता बना। चीन, थाईलैंड, म्यांमार, इंडोनेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, ब्रह्म, बर्मा, थाई, मलाया, इत्यादि देशों से भारत के घाटों तक व्यापक संबंध रहा। भारत के साथ ही, उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा। दक्षिण-पूर्वी देशों से भारत के साथ ही व्यापक संबंध रहा।

रुमरमहां रा मुराधला ना रा मरे ।

(xiii) पगझां अडे सैगलां रा पूडाह (Impact of Mountains and forests):-

डाउड रे पगझां अडे सैगलां ते ही सिखे रे सिडिगम डेउ मॉउडपूठह पूडाह पाहिक्या है। 1716 सी. हिक घेरा घाएर ही मीड थिडे नरे मिंका डेउ पेर अडिआआउ उह लगे उं डेकुं ते पगझां उे सैगलां रा मगगा सै रे रुमरमहा रे हिकेय गरीला-नये पूहाली अयहाली । अडिमरमाउ सै अघराली रे गमकिं रा हिकेय ही डेकुं ते हिमे पूहाली रुआरा सीडा । डाउडी सिडिगम हिक घाउ मागीकां हुरीकां अरिगीकां डेउगगां ही मिहरीकां उह सिंकां उं मयमहा है रि पगझां उे सैगलां ते आमरां अषहा हिकेगीकां ही मदलडा हिक मॉउडपूठह उगा लिआ है ।